ISSN 0976-0377
RNI. MAHMUL02805/2010/33461

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXIV, Vol. II
Year - 12 (Half Yearly)
(July 2021 To Dec. 2021)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur -415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Lohesvan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue:XXIV,Vol.II, July 2021 To Dec.2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	A Critical Study of Customers on Loans from NBFC's **Dr. D. A. Jogdand, Salim Karim Memon**	1
2	Recent Financial Inclusion Schemes in India **G. C. Khamkar, Dr. S. S. Suryavanshi**	11
3	Literacy Scenario in Maharashtra : A Geographical Analysis **Dr. S. B. Ashture**	21
4	नरेंद्र मोहन के नाटकों में संवादों की मंचीय सार्थकता **डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड**	28
5	भारतातील नगदमुक्त आर्थिक व्यवहार **डॉ. जे. एम. काळे, अजित गोपालराव कुलकर्णी**	32
6	महाराष्ट्रातील गहू पिकाखालील क्षेत्राचे स्थल व कालसापेक्ष विश्लेषण **डॉ जनार्धन केशवराव वाघमारे**	38
7	महात्मा फुले यांचे अस्पृश्यतेसंबंधी विचार **वसंत निवृत्ती बंडे**	43
7	भारतीय संस्कृतीतील भाषिक सौंदर्याचा शोध **पांडुरंग भिवाजी गोरे**	48

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड
हिन्दी विभाग प्रमुख,
महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा
जि. लातूर.

नाटक विधा रंगमंच से जुडी हुई विधा है। नाटक अन्य साहित्य विधा की तरह पढ़ा जा सकता है लेकिन नाटक की एक ओर विशेषता है जो अन्य साहित्यिक विधाओं में दिखाई नहीं देती वह है उसकी - दृश्यात्मकता। इस दृश्यात्मकता का मुख्य आधार संवाद है। संवाद नाटक का महत्वपूर्ण उपकरण है। नाटक में संवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः नाटक का प्रदर्शन संवादमूलक होता है इसलिए नाटक में संवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। दरअसल नाटक में संवादों का गुंफन होता है। नाटककार अपने नाटकों में विषयवस्तु चरित्र, पात्रों के परिवेश और क्रियाकलाप के अनुरूप संवादों की सर्जना करता है। दरअसल एक छपे नाटक को पढ़ना और उसको मंच पर अभिनीत देखना दो भिन्न अनुभव होते हैं। नाटक की सफलता-असफलता काफी हद तक संवाद पर निर्भर रहती है। नाटक के सफल मंचन के लिए संवादों की संरचना सार्थक होनी आवश्यक होती है। डॉ. अशोक पटेल कहते हैं - "नाटक शब्दों की कला नहीं है, शब्दों के प्रयोग की कला है।"[१] नाटक में मंच की दृष्टि से संवाद का स्वरूप संतुलित करना आवश्यक बन जाता है। नाटक को सफल और बोधगम्य बनाने में संवादों का अत्यधिक महत्व होता है। नाटक के संवाद जब पात्रानुकूल, संक्षिप्त, अर्थपूर्ण होते हैं तब मंच पर गहरा असर डालते है। संवाद नाटक के प्राण होते हैं। संवादों के शब्द-शब्द को अभिनेता जब बड़ी तन्मयता से मंच पर उच्चारित करता है तब दर्शक, श्रोताओं का रोम-रोम जागृत होता है। संवादों की अहमियत को स्पष्ट करते हुए डॉ. सदानंद भोसले जी कहते हैं - "नाटक में अभिनय कला की दृष्टि से और सफल मंचन की दृष्टि से संवाद तत्व का महत्व अनन्य साधारण है।"[२]

हिंदी साहित्य जगत में डॉ. नरेंद्र मोहन एक बहुचर्चित, सफल नाटककार के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने नौ नाटकों का सृजन किया है। नाटककार और निर्देशक के आपसी विचार-विमर्श और अर्थपूर्ण तालमेल को महत्व देते हुए उन्होंने अपने नाटकों का सृजन किया है। नरेंद्र मोहन

एक रंगमंच नाटककार है और उन्होंने संवादकीय दृष्टिकोण से अपने नाटकों को मंचीय सफल बनाया है। उन्होंने रंगमंच के अनुरूप संवादों का सफल सृजन किया है। उन्होंने अपने बहुचर्चित कथ्य और वैविध्यपूर्ण शिल्प से नाटकों में मंच और संवाद का सहज, स्वभाविक समन्वय स्थापित करना चहा है। उनके सभी नाटक रंगमंच पर खेले गए हैं। उनके नाटकों के संवाद रंगमंचीयता की दृष्टि से अनुकूल दिखाई देते है। संवाद नाटक की कथावस्तु का मूलाधार होते है। साथ ही कथानक को वहन करने की क्षमता संवादों में होती है। डॉ. अवधेश चंद्र गुप्त का कथन है - "नाटक में कथा के प्रस्तुतिकरण के लिए पात्रों की भावाभिव्यक्ति और विचार-विनिमय के लिए संवाद योजना अनिवार्य है।"[3] नरेंद्र मोहन जी ने अपने नाटकों में विषयवस्तु के अनुरूप संवादों की रचना की है। नाटकों के कथ्य को गति प्रदान करते दिखाई देते हैं। 'सींगधारी' नाटक के संवाद कथा को गति प्रदान करते हैं। संवादों में कहीं भी रूकावट का आभास नहीं दिखाई देता। इस नाटक के संवाद एक उदाहरण इस प्रकार है-

विमल : तुम सब बौखला गये हो। सभी कुछ ठीक-ठाक है।
प्यारेलाल : मुझे पेड़ जलता हुआ दिख रहा है और लोग दहशत से भागते हुए।
विमल : आँखों का इलाज करवाओ तुम्हारी आँखों में कोई बड़ा नुक्स है।
प्यारेलाल : आतंकवाद की जेहनियत से शायद तुम वाकिफ नहीं हो।
विमल : मैंने आतंकवाद के विरोध में पुस्तक लिखी है।
शिव : मैंने लेख और सम्पादकीय लिखे हैं।
विमल : तुम सब बौखला गये हो। सभी कुछ ठीक-ठाक है।
प्यारेलाल : मुझे पेड़ जलता हुआ दिख रहा है और लोग दहशत से भागते हुए।
विमल : आँखों का इलाज करवाओ। तुम्हारी आँखों में कोई बड़ा नुक्स है।
प्यारेलाल : आतंकवाद की जेहनियत से शायद तुम वाकिफ नहीं हो।
विमल : मैंने आतंकवाद के विरोध में पुस्तक लिखी है।
शिव : मैंने लेख और सम्पादकीय लिखे हैं।[४]

स्पष्ट है कि नरेंद्र मोहन के नाटकों के संवादों में स्वभाविकता, गतिशीलता दिखाई देती है। ऐसे संवाद रंगमंच पर प्रभाव उत्पन्न करते हैं साथ ही कथावस्तु को प्रभावशाली और रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

नाटक के संवाद जब पात्रानुकूल होते है तब मंच पर बहुत ही गहरा असर दल देते हैं। पात्रानुकूल संवाद ही पाठक एवं दर्शकों की नब्ज को बाँधकर रखते हैं। अभिनेता के अभिनय कौशल को चार चाँद लगा देते हैं। नाटक के सफल मंचन हेतु संवाद संक्षिप्त होने आवश्यक है। डॉ. सदानंद भोसले जी इस बात को स्वीकारते हुए कहते हैं - "नाटक के सफल मंचन हेतु संवाद

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

RNI MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXIV, Vol.II, July 2021 To Dec. 2021

संक्षिप्त भी होने चाहिए वस्तु को गतिमान बनाने के लिए संवाद संक्षिप्त होने चाहिए, संक्षिप्त अभिनयानुकूल होते हैं ।"[५] नरेंद्र मोहन के सभी नाटकों में संक्षिप्त छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग दिखाई देता है । उनके छोटे-छोटे मगर प्रभावपूर्ण, बोधगम्य संवाद नाटकों को रंगमंच सफलता दिलाने में सक्षम दिखाई देते हैं । उदाहरण स्वरुप 'हद हो गई यारो' नाटक के संक्षिप्त कुछ संवाद इस प्रकार है-

स्वामी : "तेरा भला हो, देवी ।

सुंदरी : एक कोने में पड़ा रहोगे ?

स्वामी : पड़ा रहूँगा ।

सुंदरी : कोई सवाल-जवाब नहीं करोगे?

स्वामी : नहीं करूँगा ।

सुंदरी : मेरे किसी काम में टाँग नहीं अड़ाओगे?

स्वामी : नहीं अड़ाउँगा ।

सुंदरी : दिव्य-दृष्टि का लाभ सिर्फ मुझे दोगे?"[६]

स्पट है की उपर्युक्त संवाद नाटक को मंचन के लिए अनुकूल है । पात्र एवं परिस्थिति अनुरूप नाटक के मंचीय सफलता के अनुरुप बन जाते हैं ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नरेंद्र मोहन अपने नाटकों को मंचीय सफलता दे वाले एक सशक्त नाटककार है । उनके नाटकों के संवाद सहज, सशक्त और मंचीय दिखाई देते है जो कथावस्तु को प्रभावशाली बनाती है । संवाद साथ एवं अभिनय की अनेक संभावनाओं से युक्त हैं । संवादों में तनाव, सलग्नता और चैतन्य उत्पन्न करते हैं । नाटकों में पात्रों के संवाद बेमेल या निष्प्रयोजन नहीं है । संवाद स्पष्ट, सहज और छोटे-छोटे हैं । उनके नाटकों में लम्बे संवाद भी हैं लेकिन वे बोझील या दार्शनिकता से मुक्त है । संवादों में नाटकीय गति, अर्थ की सफलता दृश्यात्मकता से युक्त दिखाई देते हैं । मंच की दृष्टि से संवाद का स्वरुप संतुलित हैं । उसमें अर्थ की गहराई एवं दृश्यात्मकता का सामर्थ्य दिखाई देता है । संवादों में काव्यात्मकता का सफल संयोजन दिखाई देता है ।

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

संदर्भ संकेत :-

१) डॉ. अशोक पटेल, नाटककार सुरेंद्र वर्मा, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-२००९, पृ. ३०७

२) सं.डॉ. विनय चौधरी, अनुराग सरिता (त्रैमासिक पत्रिका) जुलाई-दिसंबर-२०१३ (लेख-नाटक का प्राण संवाद तत्व-डॉ. सदानंद भोसले), पृ. ०९

३) डॉ. अवधेश चंद्र गुप्त, स्वातंत्र्योतर हिंदी नाटक विचार तत्व, नीरज बुक सेंटर, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९८४, पृ. २९८

४) सं. गुरुचरण सिंह, नरेंद्र मोहन रचनावली खंड-२, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-२००६, पृ. ७२

५) सं. डॉ. विनय चौधरी, अनुराग सरिता (त्रैमासिक पत्रिका) जुलाई-दिसंबर-२०१३ (लेख-नाटक का प्राण संवाद तत्व-डॉ. सदानंद भोसले) पृ. ०८

६) डॉ. नरेंद्र मोहन, हद हो गयी, यारो, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-२०१३, पृ. २५

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz